



प्रकाशक/स्वामीत्व  
रजनी (पुत्री-महेश धावनिया)

डाक पंजियन संख्या : JaipurCity/423/2017-19

# श्री बाबा



प्रधान कार्यालय-सी-57, महेश नगर, जयपुर-15, मो.-9928260244

हिन्दी मासिक समाचार पत्र



7073909291

E-mail: shreebaba\_2008@yahoo.com

वर्ष : 12

अंक : 1

आर.एन.आई. नं. : RAJHIN/2008/24962



जयपुर, 5 मार्च, 2019

मूल्य : 5 रुपए प्रति

पृष्ठ : 4

## प्रथम राज्य स्तरीय गौरक्षा सम्मेलन गौशालाओं का अनुदान बढ़ाने पर जल्द करेंगे फैसला: गहलोत

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि हमारी पिछली सरकार ने गौवंश के संरक्षण के लिए गौसेवा निदेशालय बनाया। इसके पीछे हमारी पवित्र भावना गौवंश की सेवा थी। उन्होंने कहा कि गौवंश

तिमाही का अनुदान जल्द ही जारी कर दिया जाएगा। इस संबंध में वित्त विभाग को निर्देश दे दिए गए हैं। साथ ही सूखा प्रभावित जिलों में जल्द ही चारा डिपो खोले जाएंगे।  
**गोचर भूमि पर पहला हक पशुधन का**

में गाय को माता का दर्जा दिया गया है और उसमें 33 करोड़ देवी-देवताओं का वास माना गया है। राज्य सरकार गौवंश के संरक्षण एवं संवर्द्धन का हरसंभव प्रयास कर रही है। उन्होंने स्वयंसेवी संगठनों तथा

## मिलावट करने वालों पर कठोर कार्यवाही के लिए बनाया जाएगा सख्त कानून: रघु शर्मा

जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघुशर्मा ने कहा कि मिलावट मानवता के खिलाफ अपराध है, इसलिए खाद्य पदार्थों में मिलावट करने वालों पर और

देश भी स्वस्थ होगा। उन्होंने बताया कि अभी डायबिटीज का निरन्तर प्रसार हो रहा है, इसको रोकने के लिए सभी को समन्वित प्रयास करने होंगे। साथ ही नियमित स्वास्थ्य



के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए गौशालाओं को प्रति गौवंश जो अनुदान अभी सरकार देती है, वह गायों के लिए पर्याप्त नहीं है, इस बात का अहसास मुझे व मेरी सरकार को है। हमारी सरकार जल्द ही परीक्षण कर इस पर फैसला करेगी कि कैसे प्रदेश में गौशालाओं का अनुदान बढ़ाया जाये।

श्री गहलोत शनिवार को जयपुर एजिबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर में पहले राज्य स्तरीय गौरक्षा सम्मेलन में प्रदेशभर से आए गौशाला संचालकों, उनके प्रतिनिधियों तथा गौसेवक संत-महात्माओं को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि गौशालाओं को इस साल की पहली

मुख्यमंत्री ने कहा कि गोचर भूमि पर पहला हक पशुधन का है। पशुधन को चारे की कमी नहीं हो इसके लिए सरकार गोचर एवं चारागाह भूमि के संरक्षण का पूरा प्रयास करेगी। उन्होंने कहा कि वर्ष 2008 से 2013 के समय हमारी सरकार ने गौवंश के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए देश में पहली बार गौसेवा निदेशालय की स्थापना की थी तथा गौशालाओं को 125 करोड़ का वार्षिक अनुदान दिया था। असहाय और अपंग गौवंश के लिए 25 करोड़ रूपए उपलब्ध कराए थे।

**गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाएं**  
मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी संस्कृति

समाजसेवियों का आह्वान किया कि वे गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने एवं गौवंश के संरक्षण में सरकार का सहयोग करें। समारोह में मुख्यमंत्री ने राज्य स्तरीय सर्वश्रेष्ठ गौशाला के रूप में रावचा नाथद्वारा की आदर्श गौपालन एवं संरक्षण केन्द्र के प्रबंधक श्री लक्ष्मीकांत शर्मा को प्रथम पुरस्कार के रूप में 21 हजार रूपये एवं प्रशस्ति पत्र, श्री मरुहर केसरी जैन गौशाला ट्रस्ट कुशालपुरा (पाली) के व्यवस्थापक श्री नेमीचंद सिंघवी को द्वितीय पुरस्कार के रूप में 15 हजार रूपये एवं प्रशस्ति पत्र तथा तृतीय पुरस्कार के रूप में दौसा के मण्डावर की श्री राम कबीर पीठ भागवत गौसेवा के अध्यक्ष स्वामी प्रेमदास आचार्य को 11 हजार रूपये एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए।



कठोर कार्यवाही करने के लिए सख्त कानून बनाया जाएगा। उन्होंने बताया कि अभी मिलावट को रोकने के लिए विभाग द्वारा व्यापक स्तर पर शुद्ध के लिए युद्ध अभियान चला रखा है, जिसके तहत मिलावटखोरों के खिलाफ लगातार कार्यवाही की जा रही है। डॉ. शर्मा बिड़ला ऑडिटोरियम में राजस्थान नर्सिंग महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि नर्सिंग कर्मी मरीजों और डॉक्टरों के बीच सेतु का काम करते हैं, इसलिए उन्हें ज्यादा संवेदनशील और समर्पित भाव से काम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अभी लाइफ स्टाइल से सम्बंधित बीमारियां ज्यादा पैर पसार रही है इसलिए चिकित्सा सेवाओं से जुड़े लोगों का दायित्व है कि वे लोगों को अच्छे खानपान, नियमित व्यायाम आदि के बारे में जागरूक करें। उन्होंने कहा कि पहला सुख निरोगी काया है, व्यक्ति स्वस्थ होगा, तो समाज और

जांच को भी बढ़ावा देना होगा। समारोह को सम्बोधित करते हुए परिवहन मंत्री श्री प्रतापसिंह खाचरियावास ने नर्सिंग विद्यार्थियों को आगामी जीवन की शुभकामनाएं दीं और उन्हें जीवन में कभी निराशा न होने की नसीहत भी दी। उन्होंने कहा कि बड़े सपने देखो और उन्हें पूरा करने के लिए प्रयास करो। उन्होंने कहा कि उन्होंने जो प्रोफेशन चुना है, वह बहुत ही नोबेल प्रोफेशन है। बीमार आदमी की पीड़ा को दूर करने से अधिक कोई सेवा नहीं है। उन्होंने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि वे दया और करुणा के भाव को जिंदा रखते हुए कार्य करेंगे। इससे पूर्व कार्यक्रम के सम्बंध में राजस्थान नर्सिंग महाविद्यालय के प्राचार्य श्री जोगेन्द्र शर्मा ने जानकारी दी। कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री श्रीमती ममता भूपेश, सांसद डॉ. कर्ण सिंह यादव, विधायक श्री ओमप्रकाश हुड्डा सहित बड़ी संख्या में नर्सिंग विद्यार्थी उपस्थित थे।

## ग्रामीण घरेलू आवासों के विद्युतीकरण की योजनाओं का कार्य 31 मार्च तक पूर्ण करें: नरेश पाल गंगवार

जयपुर। प्रमुख शासन सचिव ऊर्जा व अध्यक्ष डिस्कॉम्स श्री नरेश पाल गंगवार ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से तीनों

कार्यों को और गति प्रदान करते हुए शेष कार्य को 31 मार्च, 2019 तक पूर्ण किया जाए और इस दौरान घरेलू कनेक्शन के



डिस्कॉम में सौभाग्य योजना के तहत ग्रामीण घरेलू आवासों के विद्युतीकरण, डीडीयूजीजेवाई व आईपीडीएस योजना के कार्य की प्रगति की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि इन योजनाओं के कार्यों को 31 मार्च, 2019 तक पूर्ण किया जाना सुनिश्चित किया जाए।

वीडियो कॉन्फ्रेंस में कृषि कनेक्शन, राजस्व वसूली व कन्स्यूमर इंटेकसिंग के कार्य की प्रगति की भी समीक्षा की गई। डिस्कॉमवार योजनाओं की फरवरी तक हुई प्रगति की समीक्षा करते हुए श्री गंगवार ने कहा कि सौभाग्य योजना, डीडीयूजीजेवाई व आईपीडीएस योजना के

लिए आवेदन करने वाले नए आवेदकों को भी तुरन्त कनेक्शन जारी करने की कार्यवाही की जाए।

जून माह तक एक लाख कृषि कनेक्शन जारी करने की प्रगति की समीक्षा करते हुए श्री गंगवार ने कहा कि आवेदकों को कृषि कनेक्शन देने की सम्भावित तिथि की सूचना से सम्बन्धित पत्र 5 मार्च, 2019 तक प्रेषित कर दिए जाए। उन्होंने कहा कि सब-डिवीजन स्तर तक के लक्ष्य जारी कर दिए हैं और लक्ष्य के अनुसार कनेक्शन देने का कार्य किया जाएगा तो 30 जून, 2019 तक लक्षित एक लाख कनेक्शन आसानी से जारी किए जा सकेंगे।

## राजस्थान में पर्यटन के क्षेत्र में जीविकोपार्जन की अपार संभावनाएं हैं: सचिन पायलट

जयपुर। उप मुख्यमंत्री श्री सचिन पायलट ने कहा कि राजस्थान में मौजूद पुरा सम्पदा, समृद्ध इतिहास, वन्य सम्पदा व अनेक ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों के कारण यहां पर्यटन के क्षेत्र में जीविकोपार्जन की अपार संभावनाएं हैं। जरूरत है कि पर्यटन उद्योग की सही प्रकार से मार्केटिंग की जाए। श्री पायलट ने यह बात रविवार को एनडीटीवी एवं पर्यटन विभाग की संयुक्त पहल %पधारो म्हारे देश% के तहत %पर्यटन व जीविकोपार्जन% विषय पर अल्बर्ट हॉल पर आयोजित परिचर्चा में पत्रकार नि ?धि राजदान के सवालों पर गणमान्य अतिथियों के समक्ष कही। उन्होंने कहा कि देश में आने वाले प्रत्येक 3 पर्यटक में से एक राजस्थान आता है व एक पर्यटक के राज्य में भ्रमण पर आने से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से 14 लोगों को रोजगार मिलता है। लेकिन गत वर्षों में पर्यटकों हेतु आवश्यक सुविधाएं विकसित करने पर ध्यान न देने, उन्हें आकर्षित करने हेतु मार्केटिंग पर ध्यान न देने व उनकी सुरक्षा पर ध्यान न देने के कारण प्रदेश में बहुतायत में आकर्षक

पर्यटन स्थलों की मौजूदगी के बावजूद पर्यटन के क्षेत्र में राज्य पिछड़ गया। लेकिन अब राज्य में पर्यटन उद्योग पर विशेष ध्यान



दिया जा रहा है।

इस क्षेत्र का सही प्रकार से दोहन किया जाये तो लाखों की तादाद में प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित लोग रोजगार पा सकते हैं। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में अनेक नये टूरिस्ट सर्किट व डेस्टिनेशन को सुव्यवस्थित तरीके से विकसित करने की जरूरत है। इनके विकास से रोजगार के नये अवसर युवाओं के लिए सृजित हो सकते हैं। अगर केन्द्र राज्य को पर्यटन के क्षेत्र में विकास हेतु पर्याप्त सहयोग प्रदान

करे तो प्रदेश में पर्यटन उद्योग नई उंचाइयों हासिल कर सकेगा। इससे राज्य की अर्थव्यवस्था के साथ-साथ देश की

अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा पर विशेष ध्यान देगी ताकि ज्यादा से ज्यादा बच्चे बड़े होकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। शिक्षित व अशिक्षित युवाओं को रोजगार प्रदान करना प्रदेश व देश के लिए उन्होंने सबसे बड़ी चुनौती बताया व कहा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के कार्यकाल में शुरू की गई मनरेगा योजना देश के

ग्रामीणों के लिए जीवनदायिनी बन चुकी है। इससे लगभग 40 प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा से उपर उठ सके। विश्व में रोजगार प्रदान करने वाली ऐसी योजना कहीं नहीं है। पर्यटन मंत्री श्री विश्वेन्द्र सिंह ने प्रदेश में पर्यटन उद्योग के विकास हेतु आधारभूत ढांचे में सुधार की जरूरत बताते हुए कहा कि हमें ज्यादा से ज्यादा देशी व विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए इतिहास, पुरा सम्पदा, धार्मिक महत्व के स्थलों व वन्य सम्पदा को जोड़ना होगा।

### समाचार विज्ञापन संकलन

श्री बाबा समाचार पत्र की प्रकाशन तिथि प्रत्येक माह की 5 तारीख है। अतः समाचार एवं विज्ञापन आदि के प्रकाशन के लिए विज्ञप्ति, फोटो आदि सामग्री माह की 20 तारीख तक पूर्ण विवरण के साथ भिजवा दें। सम्पर्क करें:

श्री बाबा whatsapp 7073909291

सी-57, महेश नगर, 80 फीट रोड, जयपुर-15

मो.-9928260244 E-mail : shreebaba\_2008@yahoo.com



## सम्पादकीय

## होली के दिन दिल खिल जाते हैं, रंगों में रंग मिल जाते हैं

होली पर्व भारत में धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाया जाने वाला प्राचीन पर्व है। होली पर्व हिन्दू पंचांग के अनुसार फाल्गुन महीने के शुक्ल पक्ष के अंतिम दिन पूर्णिमा को मनाया जाता है। होली पर्व भारत में परम्परागत रूप से दो दिन मनाया जाता है। पहले दिन फाल्गुन मास की पूर्णिमा को पूजा की होली मनाई जाती है। इस दिन होलिका दहन होता है। इस दिन गोबर के उपलों या लकड़ियों से भारत में जगह-जगह होली रखी जाती है। सभी लोग प्राचीन परम्पराओं के अनुसार होली को पूजते हैं और रात में होलिका दहन होता है। जलती हुई होली के चारों ओर लोग परिक्रमा करते हैं और अपने लिये और अपनों के लिए मनौतियाँ मांगते हैं। उत्तर भारत में होलिका दहन के दिन जलती हुई होली में गेहूँ की बाल को भूनकर खाने की परम्परा है। होली के दूसरे दिन चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को धुलेंडी यानी कि खेलने वाली होली मनाई जाती है। धुलेंडी के दिन लोग एक दूसरे को सुबह उठकर गुलाल लगाने जाते हैं। इस दिन छोटे अपने बच्चों से गुलाल लगाकर आशीर्वाद लेते हैं। इस दिन लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, और पारम्परिक रूप से होली मनाते हैं। इस दिन घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। धुलेंडी के दिन देश भर के गली मोहल्लों में ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं और नाच-गाने किये जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि होली के दिन लोग अपने गले-शिकवे और आपसी कटुता भूल कर एक दूसरे से गले मिलते हैं और पुनः दोस्त बन जाते हैं। रंगों से होली खेलने और नाचने-गाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद लोग नहा-धोकर थोड़ा विश्राम करने के पश्चात् नए कपड़े पहनकर सांझ में एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं। लोग अपनी कटुता भुलाकर गले मिलते हैं और एक दूसरे को होली पर पारम्परिक रूप से बनायी जाने वाली गुजिया और अन्य मिठाइयाँ खिलाते हैं। अगर ब्रज की बात की जाए तो ब्रज में होली पर्व की शुरुआत वसंत पंचमी के दिन से हो जाती है। वसंत पंचमी के दिन ब्रज के सभी मंदिरों और चौक-चैराहों पर होलिका दहन के स्थान पर होली का प्रतीक एक लकड़ी का टुकड़ा गाड़ दिया जाता है और लगातार 45 दिनों तक ब्रज के सभी प्राचीन मंदिरों में प्रतिदिन होली के प्राचीन गीत गए जाते हैं। ब्रज की महारानी राधा जी के गाँव बरसाने में होली से आठ दिन पहले फाल्गुन महीने की शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन लड्डू मार होली से इस प्राचीन पर्व की शुरुआत होती है। इसके बाद फाल्गुन महीने की शुक्ल पक्ष की नवमी के दिन से लठमार होली की शुरुआत होती है जो कि होली का त्यौहार खत्म होने तक लगातार चलती है। पूरे विश्व भर में मशहूर बरसाना की लठमार होली में (हुरियारिनें) महिलाएं पुरुषों (हुरियारों) के पीछे अपनी लाठी लेकर भागती हैं और लाठी से मारती हैं। हुरियारे खुद को ढाल से बचाते हैं। इस लठमार होली को दुनिया भर से लोग देखने को आते हैं। यह होली राधा रानी के गाँव बरसाने और श्रीकृष्ण जी के गाँव नंदगांव के लोगों के बीच में होती है।

बरसाने और नंदगांव गाँवों के बीच लठमार होली की परंपरा सदियों से चली आ रही है। होली पर्व पूरे देश में परंपरा, हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाया जाने वाला त्यौहार है। होली पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। होली पर्व हमारे देश में उपस्थित बहुसांस्कृतिक समाज के जीवंत रंगों का प्रतीक है। होली पर्व देश में हमारी संस्कृति और सभ्यता के मूल सहिष्णुता और सौहार्द की भावना को बढ़ावा देने वाला पर्व है। इस पर्व को सभी लोगों को शांति, सौहार्द और भाईचारे की भावना से मनाना चाहिए। देश के सभी नागरिकों को इस दिन साम्प्रदायिक भावना से ऊपर उठकर अपने गले-शिकवे और कटुता का परित्याग कर बहुलवाद की भावना से अपने आप को रंगना चाहिये, जिससे कि देश में शांति, सौहार्द, समृद्धि और खुशहाली कायम हो सके।

## दलितों की दुर्दशा का जिम्मेदार कौन ?

## गतांक से आगे

देखो अपने आस-पास, जो भी गुलाम मानसिकता का व्यक्ति होगा, वो अपने खाली समय में भी बजाए दिमाग पर जोर देने के, सोचने, सुसंगति ढूँढने, पढ़ने, ज्ञान-चर्चा आदि में शामिल होने के, वो गाना बजाने, फ़िज़ूल की बातों और धार्मिक बाबाओं या स्थलों के चक्कर काटने में अपना समय बर्बाद करेगा। ऐसे लोगों को समझाने की कोशिश करने वाले को दुःखी व निराश और कई बार जान से भी हाथ धोना पड़ता है क्योंकि मूर्ख से बड़ा और कोई दुश्मन नहीं। सदा ध्यान रहे कि हमारा नजरअंदाज और अनसुना करना और विलम-ढाल रवैया हमारी दुर्दशा का मूल कारण है। संसार में दो ही तरह के लोग हैं, एक वो जो जीवन को अपने हिसाब से

चलाते हैं, ये शासक बनते हैं, जो गुलामों के भाग्य का फैसला करते हैं।

दूसरे वो जो 'नजरअंदाज और अनसुना' करके जीवन के हिसाब से चलते हैं, ये ही गुलाम हैं। आप सोचिये आप किनमें से हैं। ये एक कड़वा सच है कि बहुजन उद्धार के मिशन को जितना खतरा ब्राह्मणवाद से है उससे कहीं ज्यादा खतरा मूर्ख दलितों से है। वो सुनना और समझना ही नहीं चाहते, संघर्ष तो बाद की बात है।

कभी सोचा इतनी घृणा क्यों? आखिर इतना भी क्या बुरे हैं यहां के ये बहुजन लोग? इसका सीधा जवाब है निकम्मापन। पर एक बात तय है कि समाज में सभी निकम्मे नहीं। अगर ऐसा होता तो इतने दमन के बावजूद ये कौम आज वर्चस्व में न होती। असल में इस कौम में जो संघर्ष

कर रहा है, वो तो जी-जान से लगा है और बहुत ज्ञानी व मेहनती है। परंतु जो नहीं कर रहे हैं उनका निकम्मापन इतना ज्यादा है कि वो सारे संघर्ष को न केवल बर्बाद

वाले से जुल्म सहने वाला ज्यादा गुनाहगार होता है। हमारे लोगों की अहसान फरामोशी हमारे पतन का मुख्य कारण है। अहसान फरामोश लोग हर कौम में होते हैं। उन्हें

छोड़ो। ऐसा केवल हमारा समाज ही नहीं होता, हर समाज में होता है। हिंदुत्व और उसके सवर्ण भी इससे अछूते नहीं हैं, हिंदुत्व के महाज्ञानी स्वामी विवेकानंद ने इस विषय में कहा है। 'यही दुनिया है! यदि तुम किसी का उपकार करो, तो लोग उसे कोई महत्व नहीं देंगे, किन्तु ज्यों ही तुम उस कार्य को बन्द कर दो, वे तुरन्त; ईश्वर न करे, तुम्हें बदमाश प्रमाणित करने में नहीं हिचकिचायेंगे। मेरे जैसे भावुक व्यक्ति अपने सगे - स्नेहियों द्वारा सदा उगे जाते हैं।' आज हमारे समाज में तीन तरह के लोग हैं। 1. अशिक्षित एवं असक्षम वर्ग। 2. शिक्षित वर्ग पर



करते हैं बल्कि हमारे मेहनती लोगों को भी निकम्मों के क्रतार में ला खड़ा करते हैं। यही है वो कारण जिसकी वजह से निम्नलिखित दो कहावतें मशहूर हैं -

1. दलित ही दलित का सबसे बड़ा दुश्मन होता है ; पर सक्षम, सक्षम का सबसे बड़ा साथी होता है। 2. जुल्म करने

बहुजन संघर्ष से अपरिचित व 3. शिक्षित, ज्ञानी, सक्षम और संघर्षशील वर्ग। इनमें से जो पहला वर्ग है, वो जनसंख्या दबाव या भीड़ के रूप में सबसे ज्यादा संघर्ष को आगे ले जा रहा है। दूसरा वर्ग किसी काम का नहीं, उल्टा ये विभीषण है।

क्रमशः

## वैवाहिक

## वर चाहिए

- \* बाँदीकुई निवासी, 25 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., बी.एड., पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-भैण्डवाल, कुण्डारा, नगावाड़ी मो. 9414072525
- \* बाँदीकुई निवासी, 31 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., पिता-निजी कार्य, गौत्र-नागरवाल, भैण्डवाल, जोनवाल, मो. 9414072525
- \* जयपुर निवासी, 25 वर्ष, शिक्षा-बी.ए., जी.एन.एम., गौत्र-तलावलिया, बुहाडिया, मीमरोट, आकोदिया, गंगवाल, बथेड़ी, बथाला, कुण्डारा।
- \* जयपुर निवासी, 26 वर्ष, शिक्षा-एम.कॉम., पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-नंगवाड़ा, कुण्डारा, जोनवाल, बड़ी माँ महर, मो. 8963617959
- \* जयपुर निवासी, 26 वर्ष, शिक्षा-बी.ए., पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-नंगवाड़ा, कुण्डारा, जोनवाल, बड़ी माँ महर, मो. 8963617959
- \* अजमेर निवासी, 29 वर्ष, शिक्षा-एम.कॉम., बी.एड., पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-नगावाडा, सिसोदिया, लालावत, लोड़तिया।
- \* जयपुर निवासी, 25 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., गौत्र-गंगवाल, बंशीवाल, जोनवाल।
- \* जयपुर निवासी, 24 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., पिता-निजी कार्य, गौत्र-टाटीवाल, मेहर, जोनवाल, सामने मिमरोट न हो।
- \* जयपुर निवासी (बलाई), 27 वर्ष, शिक्षा-बी.कॉम, एम.कॉम, पिता-बैंक अधिकारी, गौत्र-Ranghera, Narnolia, Rewadia, Naharwal. मो. 9414296277
- \* जयपुर निवासी, 23 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., बी.एड., वर्तमान में प्राइवेट अध्यापक, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-जारवाल, खोड़वाल, जोनवाल। मो. 9887732558
- \* जयपुर निवासी, 27 वर्ष, शिक्षा-एम.बी.बी.एस., एम.एस., पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-उचैनिया, भीमवाल, रेवाडिया। मो. 9418173764
- \* जयपुर निवासी, 24 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., पिता-निजी कार्य, गौत्र-टाटीवाल, मेहर, जोनवाल, सामने मीमरोट ना हो। मो.-8104196500

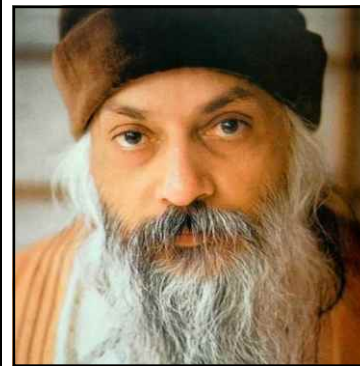
## वधू चाहिए

- \* जयपुर निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-बी.एस.सी., वर्तमान में प्राइवेट जॉब, पिता राजकीय सेवा, गौत्र नंगावाड़ा, कुण्डारा, जोनवाल, बड़ी माँ महर, मो. 8963617959
- \* जयपुर निवासी, 23 वर्ष, शिक्षा-बी.एस.सी., वर्तमान में सब इंस्पेक्टर (सी.आई.एस.एफ.), पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-धावनिया, बड़गोती, गोठवाल, टटवाड़ी, मो. 7073909291
- \* जयपुर निवासी, 40 वर्ष, (विधुर) शिक्षा-5वीं पास, वर्तमान में ड्राईवर, गौत्र-सुलानियां, गौठवाल, कुण्डारा, टटवाड़ी।
- \* दौसा निवासी, 27 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., वर्तमान में सरकारी अध्यापक, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-बेण्डवाल, नागरवाल, जोरवाल, जारवाल, सामने लोदवाल न हो।
- \* जयपुर निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-बीसीए, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-देवतवाल, जारवाल, भहरवाल, मो.-9950714872
- \* हनुमानगढ़ निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-10वीं पास, प्राइवेट सर्विस, गौत्र-बंशीवाल, चरावण्डिया, नीमरोट
- \* जयपुर निवासी, 34 वर्ष, शिक्षा-बीए, एमए, निजी ज्वैलरी कार्य, गौत्र-जोनवाल, कुवाल, लोदवाल+जाटवा, मो.-9829542057
- \* जयपुर निवासी, 36 वर्ष, शिक्षा-बीए, एलएलबी, कर सलाहकार, गौत्र-जोनवाल, कुवाल, लोदवाल+जाटवा, मो.-9782199234
- \* जयपुर निवासी, 30 वर्ष, शिक्षा-दसवीं, बिग बाजार में ज्यूस की दुकान पर सर्विस, गौत्र-लोदवाल, गोठवाल, बीलवाल
- \* गंगापुरसिटी निवासी, 32 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., बी.एड., पिता-बैंक सेवा, गौत्र-लोदवाल, माली, बागोरिया, मो.-7073799722, 9530157307
- \* जयपुर निवासी, 30 वर्ष, शिक्षा-बी.सी.ए., वर्तमान में अशोक लीलैण्ड कम्पनी में अकाउंटेंट, पिता-निजी कार्य, गौत्र-गोठवाल, बड़ोदिया, नागरवाल, टाटीवाल, जाटवा, मीमरोट, मो.-9950391188

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें, मो.: 9928260244

## भय में जीना

तुम्हारे सारे भय तादात्म्य की उपज हैं। तुम किसी स्त्री से प्रेम करते हो और प्रेम के साथ, उसी पैकेज में भय आता है कि वह तुम्हें छोड़ देगी। वह पहले भी किसी को छोड़ चुकी है और फिर तुम्हारे साथ



आई है। ऐसा घटा है; शायद वह तुम्हारे साथ ऐसा ही करे। भय लगता है, पेट में गांठें पैदा होती हैं। तुम अत्यधिक जुड़े हुए हो। एक छोटी-सी बात तुम्हारी समझ में नहीं आती कि तुम इस दुनिया में अकेले आए हो, तुम यहां पर कल भी थे, बिना इस स्त्री के, भले-चंगे, पेट में किसी गांठ के बगैर और कल को अगर यह स्त्री चली जाए तो गांठों की जरूरत क्या है? तुम जानते हो उसके बिना कैसे जीना और तुम उसके बगैर मजे से जीओगे। यह भय कि

कल चीजें बदल जाएंगी, कोई मर जाएगा, तुम्हारा दीवाला निकल जाएगा, तुम्हारी नौकरी छिन जाएगी। हजारों चीजें ऐसी हैं, जो बदल सकती हैं। तुम ज्यादा से ज्यादा भयों के नीचे दब जाते हो। और उनमें से कोई भी असली कारण नहीं है। क्योंकि कल भी तुम इन्हीं भयों से भरे थे, व्यर्थ ही। चीजें बदल गई हों, लेकिन तुम अभी भी जिंदा हो। मनुष्य के पास बहुत बड़ी क्षमता है किसी भी स्थिति से तालमेल करने की। कहते हैं, केवल मनुष्य और तिलचट्टे में तालमेल करने की अपरिसीम क्षमता है। इसीलिए जहां आदमी मिलेगा वहां तिलचट्टा मिलेगा। और जहां तिलचट्टा मिलेगा वहां आदमी मिलेगा। वे एक साथ होते हैं, उनमें समानता है। सुदूर क्षेत्रों में जैसे कि उत्तर ध्रुव या दक्षिण ध्रुव जब मनुष्य इन स्थानों में गया, उसे अचानक पता चला कि वह अपने साथ तिलचट्टे लाया है। और वे पूरी तरह से स्वस्थ और जीवित थे और प्रजनन कर रहे थे। अगर तुम पृथ्वी पर नजर डालो तो देखोगे कि मनुष्य हजार तरह की विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में, मौसमों में, राजनैतिक और सामाजिक स्थितियों में, धार्मिक वातावरणों में जीता है; लेकिन वह जी लेता है। और वह सदियों से जीता चला आया है, चीजें बदल जाती हैं, लेकिन वह स्वयं को समायोजित करता चला जाता है। डरने की कोई जरूरत नहीं है। यह दुनिया भी डूब जाए तो क्या? उसके साथ तुम भी समाप्त हो जाओगे। क्या तुम सोचते हो कि तुम एक द्वीप पर खड़े रहोगे और दुनिया विनष्ट हो जाएगी सिर्फ तुम्हें छोड़कर? फिक्र मत करो, कम से कम तुम्हारे साथ कुछ तिलचट्टे तो होंगे ही। अगर दुनिया खत्म हो जाए तो समस्या क्या है? मुझसे यह कई बार पूछा गया है। लेकिन समस्या क्या है? अगर वह खत्म होती है तो होती है। उसमें कोई समस्या नहीं है क्योंकि हम यहां नहीं रहेंगे, हम उसके साथ समाप्त हो जाएंगे और चिंता करने के लिए भी कोई नहीं रहेगा। यह वस्तुतः भय से सबसे बड़ी मुक्ति होगी।

## सदस्यता शुल्क

वार्षिक सदस्यता

100 रुपए

## विशिष्ट द्विवार्षिक सदस्यता

500 रुपए

साथ में पाएं दो वैवाहिक एवं एक

क्लासीफाइड डिस्प्ले

विज्ञापन

बिल्कुल मुफ्त

## आजीवन सदस्यता

2100 रुपए

## संरक्षक सदस्यता

5100 रुपए



## जहर भी बन सकता है पानी, जानिए इसे कैसे बनाएं अमृत

शरीर के लिए पानी से महत्वपूर्ण दूसरी चीज शायद ही हो। चूंकि मनुष्य का आधे से अधिक शरीर पानी से ही बना है और शरीर की सभी गंदगी को प्राकृतिक तरीके



से निकालने में पानी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए दिन में आठ से दस गिलास पानी पीने की सलाह दी जाती है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि पानी पीने का भी अपना एक तरीका होता है, अन्यथा इस अमृत को जहर में बदलते देर नहीं लगती। गलत समय पर गलत तरह से पिया गया पानी शरीर को सिर्फ और सिर्फ नुकसान ही पहुंचाता है। तो चलिए जानते हैं पानी पीने के कुछ नियमों के बारे में-

### पीएं खाली पेट

सुबह उठकर व्यक्ति को सबसे पहले पानी ही पीना चाहिए। इससे व्यक्ति को पेट संबंधी परेशानियां जैसे कब्ज या अपच आदि समस्याएं नहीं होती और पेट भी ठीक तरह से साफ होता है।

यह पूरी तरह आपके उपर है कि तांबे में रखा पानी पीएं या गर्म पानी पीएं या फिर पानी में नींबू व शहद मिलाएं। आप

किसी भी तरह से पानी लें लेकिन एक या दो गिलास पानी अवश्य पीएं।

### भोजन के साथ नहीं

कुछ लोग भोजन के साथ हमेशा एक गिलास पानी अवश्य रखते हैं। अगर आपको भी यही आदत है तो आज ही इसे बदल दीजिए।

कभी भी भोजन के साथ पानी न पीएं। इससे भोजन की पाचन प्रक्रिया स्लो होती है। अगर आपको पानी पीने की जरूरत महसूस हो रही है तो महज एक या दो घूंट ही पानी पीएं। साथ ही कोशिश करें कि आप ठंडे पानी के स्थान पर गुनगुना पानी पीएं। जैसे भोजन से एक घंटे पहले पानी पीना काफी अच्छा माना जाता है। ऐसा करने से व्यक्ति की भूख पर नियंत्रण होता है और व्यक्ति अधिक कैलोरी का सेवन करने से बच जाता है, जिससे वजन भी नियंत्रित रहता है।

### हमेशा पीएं बैठकर

अक्सर हम घरों में देखते हैं कि लोग हमेशा जल्दी में होते हैं और कहीं भी आते-जाते या गर्मी के मौसम में सीधे ही फ्रिज से निकालकर पानी पीते हैं। लेकिन उनकी यही खड़े होकर पानी पीने की आदत सेहत को नुकसान पहुंचाती है। सबसे पहले तो ऐसा करने से व्यक्ति को तृप्ति का अहसास नहीं होता। साथ ही ऐसा करने से व्यक्ति के जोड़ों में भी दर्द की शिकायत होती है। इसलिए हमेशा बैठकर व आराम से ही पानी पीएं। एक साथ एक गिलास पानी पीने की बजाय घूंट-घूंटकर पानी पीना अच्छा रहेगा।

## खर्राटों और थाइरॉयड से मुक्ति पाने के लिए करें उज्जयी प्राणायाम

सोते समय खर्राटे आने की समस्या काफी लोगों को होती है। खास बात यह है कि इस समस्या का कोई सटीक इलाज भी नहीं है। इस समस्या में प्राणायाम से आराम मिल सकता है। थाइरॉयड की समस्या भी अब काफी लोगों में देखने को मिल रही है। यह एक ग्रंथि होती है, जिससे निकलने वाले रसायन के असंतुलित होने से मोटापा या अत्यधिक कम वजन होने की समस्या हो सकती है। उज्जयी प्राणायाम इस समस्या में भी राहत पहुंचाता है। यहां नीचे दिए लिंक में योग गुरु बाबा रामदेव इस प्राणायाम को करने की सही विधि बता रहे हैं। इसे देखें और सही विधि से प्राणायाम करें-

### उज्जयी प्राणायाम का अर्थ-

उज्जयी शब्द का अर्थ होता है- विजयी। इस प्राणायाम में वायु पर नियंत्रण किया जाता है। इसमें उज्जयी क्रिया और प्राणायाम के माध्यम से बहुत से गंभीर रोगों से बचा जा सकता है। इसका अभ्यास तीन प्रकार से किया जा सकता है- खड़े होकर, लेटकर तथा बैठकर।

### उज्जयी प्राणायाम विधि

**पहली विधि-** सुखासन में बैठ कर मुंह को बंद करके नाक के दोनों छेद से तब तक सांस अन्दर खींचें जब तक फेफड़े हवा से पूरी तरह भर न जाएं। फिर कुछ देर सांस अंदर रोक कर रखें। शुरुआत में जितना हो सके उतना ही करें। इसे धीरे-धीरे 1 से 2 मिनट तक कर सकते हैं।

फिर नाक के दाएं छिद्र को बंद करके बाएं छिद्र से वायु को धीरे-धीरे बाहर



निकाल दें। वायु को अंदर खींचते व बाहर छोड़ते समय गले से खर्राटों की आवाज निकलनी चाहिए। इस तरह इस क्रिया का पहले 5 बार अभ्यास करें और धीरे-धीरे अभ्यास की संख्या बढ़ाते हुए 20 बार तक ले जाएं।

**दूसरी विधि-** गले को सिकोड़ कर सांस इस प्रकार लें व छोड़ें की इस क्रिया की आवाज आए। पांच से दस बार श्वास

इसी प्रकार लें और छोड़ें। फिर इसी प्रकार से श्वास अंदर भरकर जालंधर बंध (कंठ का संकुचन) शिथिल करें और फिर धीरे-धीरे रेचन करें अर्थात् श्वास छोड़ दें। अंत में मूलबंध शिथिल करें। ध्यान विशुद्धि चक्र (कंठ के पीछे रीढ़ में) पर रखें।

### लाभ

शास्त्रों में बताया गया है कि नियमित रूप से उज्जयी प्राणायाम का अभ्यास करने से लंबे समय तक उग्र का प्रभाव नहीं पड़ता है। यह थाइरॉयड रोगियों के लिए बहुत उपयुक्त प्राणायाम है। इसे करने से गर्दन में मौजूद पैराथाइरॉयड भी दूरस्त रहता है। यह प्राणायाम मस्तिष्क से गर्मी दूर कर आराम पहुंचाता है। इसके नियमित अभ्यास से पाचन शक्ति बढ़ती है। यह गले से बलगम को हटाता है और फेफड़े की बीमारियों को रोकता है। यह हृदय रोगियों के लिए बहुत अच्छा प्राणायाम है। इसे करने से खर्राटों की समस्या भी दूर हो जाती है।

## एसिडिटी की समस्या से निजात पाने के लिए दवाई नहीं करें यह योगासन

आज के समय में लोगों के खानपान की आदतों में काफी अनियमितता देखने को मिलती है। कभी-कभी काम के चलते मील स्किप करना या फिर बाहर का हैवी मसालेदार और ऑयली भोजन करना।

इसलिए किसी विशेषज्ञ की देख-रेख में ही यह आसन करें। साथ ही रीढ़ संबंधी गंभीर रोग अथवा गले में कोई गंभीर रोग होने की स्थिति में यह आसन न करें। इस आसन का अभ्यास करने के लिए सबसे



इस तरह की आदतों के चलते लोगों को एसिडिटी की समस्या का सामना करना पड़ता है। अमूमन देखने में आता है कि लोग एसिडिटी होने पर दवाइयों का सेवन करते हैं। लेकिन अगर आप चाहें तो कुछ योगासनों का नियमित अभ्यास करके एसिडिटी की समस्या को हमेशा के लिए अलविदा कह सकते हैं-

**सेतुबन्धासन-** इस आसन का अभ्यास करने के लिए सबसे पहले पीठ के बल लेट जाएं और अपने दोनों पैरों को कूल्हे की तरफ खींचें। अब दोनों पैरों में थोड़ा अंतर रखकर हाथों से पैरों के टखनों को पकड़ लीजिए। अब अपनी पीठ, कूल्हे और जांघों के साथ ऊपर की ओर उठने की कोशिश करें। कमर को ज्यादा से ज्यादा ऊपर उठा लें और सिर व कंधे जमीन पर ही रहने दें। इस दौरान आपकी टुडू आपकी छाती से टच करती हो। अब इस स्थिति में कुछ देर रुकें। अब सामान्य स्थिति में वापिस लौटने से पहले पीठ को जमीन पर लाएं। अंत में कुछ क्षण रिलैक्स करें और फिर से इस आसन का अभ्यास करें। वैसे तो इस आसन से एसिडिटी से आराम मिलता है, लेकिन अगर आपको किसी भी तरह की पीठ संबंधित समस्या है तो इस आसन का अभ्यास न करें।

**हलासन-** अगर आपने अभी योगासन करना शुरू किया है तो इसका अभ्यास करना थोड़ा कठिन हो सकता है।

पहले पीठ के बल ले जाएं। दोनों पैर पूरी तरह सीधे और एक दूसरे से सटे हुए होने चाहिए। अब एक गहरी सांस लेते हुए दोनों पैरों को एक साथ ऊपर लेकर जाएं। शरीर के ऊपरी हिस्से से पहले 30 डिग्री, फिर 60, अब दोनों हाथों को कमर पर टिकाते हुए पैरों को 90 डिग्री पर लाएं। अब धीरे-धीरे सांस छोड़ते हुए पैरों को कमर से आगे चेहरे की तरफ लेकर जाएं। ध्यान रखें कि घुटने से पांव मुड़ने नहीं चाहिए। धीरे-धीरे पीछे जाते हुए पैरों को जमीन पर टिकाएं। अपनी दृष्टि नाभि या नाक पर केंद्रित रखें। कुछ क्षण इस अवस्था में रुकें। अब धीरे-धीरे श्वास लेते हुए पैरों को ऊपर उठाते हुए पूर्व रूप में आ जाएं।

**सुमबद्धकोणासन-** इस आसन का अभ्यास करने के लिए सर्वप्रथम श्वासन की मुद्रा में पीठ के बल लेट जाएं। अब बांहों को शरीर के दोनों तरफ पैर की दिशा में फैलाकर रखें, इस स्थिति में हथेलियां छत की ओर होना चाहिए। इसके बाद घुटनों को मोड़कर और तलवों को जमीन से लगाकर रखें।

दोनों तलवों को नमस्कार की मुद्रा में एक दूसरे के करीब लाकर जमीन से लगाएं। जितना संभव हो एड़ियों को जंघा की ओर लाएं। इस मुद्रा में 30 सेकेण्ड से 1 मिनट तक बने रहें। हाथों से दोनों जंघाओं को दबाएं और धीरे धीरे सामान्य स्थिति में लौट जाएं।

## बदरंग रिश्तों में नया रंग भरती है होली

बसंत आगमन के साथ प्रकृति जब नए सिर से खुद को संवारती है, तो उसकी छटा निराली होती है। वह अपनी सारी गांठें खोलकर खुद को विविध रंगों के माध्यम से अभिव्यक्त करती है। उस समय पेड़-



पौधों की हरियाली और नाना प्रकार के पुष्प अपनी रंग बिरंगी छटा से मन मोह लेते हैं। तब मनुष्य का मन जैसे तरुण हो उठता है। होली आते-आते यह तरुणई मादकता में डूबने इतराने लगती है। इस दृष्टि से देखें तो होली मन को गांठें खोल देने का त्योहार है।

यह ऐसा त्योहार है, जिसमें सभी धर्मों और समुदायों के लोग एक दूसरे को गुलाल लगाकर और गले मिल कर मन के मैल को भी इस मौके पर धो लेते हैं। दुनिया की किसी संस्कृति में ऐसा पर्व नहीं है, जिसमें मनुष्य एक दूसरे पर रंग डाल कर बदरंग हो गए रिश्ते में भी नया रंग भर लेते हैं। तन पर पिचकारियों की फुहार पड़ते ही और गालों पर एक दूसरे को गुलाल मलते हुए भारतीय समाज अपने सारे गिले-शिकवे दूर कर लेता है। क्यो न हो, जब इस देश की प्रकृति अलग-अलग मौसम

से अपना मिजाज बदल लेती है, तो भला यहां के लोग भी लंबे समय तक एक रंग में ही क्यो रंगे रहें।

होली पर हर रंग अपना एक अलग संदेश लेकर आता है। गोरी के गालों पर जब पिया लाल रंग लगाते हैं तो यह उसके प्रति प्यार की गरमाहट को ही अभिव्यक्त करता है। और लाल रंग में सराबोर पत्नी जब पलट कर अपने पति, देवर, बहनोई या भाइयों को हरे रंग का गुलाल लगाती है, तो वह संबंधों में निर्मलता और प्रकृति से नारी के संबंध को ही प्रकट करती है। इसी प्रकार जब प्रियजनों को पीला रंग लगाया जाता है, तो हम यह संकेत देना चाहते हैं कि चलो हम फिर से अपने संबंधों को शुद्ध कर लें। शुभ अवसरों पर पीले रंग का कितना

महत्व है, यह हर भारतीय समझता है। हम चाहें जामुनी रंग लगाएं या काला रंग, सभी का एक ही संदेश है कि



मन से उदासी के रंग को दूर करो। होली उत्साह से भरपूर त्योहार है। थोड़ी मस्ती, थोड़ी उछल कूद और थोड़ी चुहलबाजी ये सब होली पर दिखते हैं। रंग-गुलाल से खिला मन तब और आह्लादित हो जाता है, जब घर पर ठंडाई और पकवान खाने को मिलते हैं। उत्तर और पूर्वी भारत में इस मौके पर तो इतने पकवान बनते हैं कि सोचना पड़ता है कि

क्या खाएं और क्या छोड़ें। होली पर मस्ती करने के बाद यों भी भूख बढ़ जाती है। खोए और चाशनी में बनी गुड़िया, गरमा-गरमा जलेबी, गुड़ और चीनी के पुए, मालपुए, गरमागरम पकौड़े, दही भल्ले और ठंडाई तो खासतौर से बनते हैं। एकल और संयुक्त परिवारों में महिलाएं सुबह से पकवान बनाने में जुट जाती हैं। उनमें प्यार और उल्लास देखते बनता है। दिल से बनाए ये पकवान खाने वाले के मन में भी मिठास घोल देते हैं। मित्रों और संबंधियों के घर सुबह या फिर शाम ढलने पर लोग जब जाते हैं, तो उनका तरह-तरह के पकवानों से ही स्वागत होता है। होली पर जिस तरह से रंगों से हम अपना स्नेह प्रकट करते हैं उसी तरह से पकवानों का भी संदेश है कि साल भर इसी तरह रिश्तों में भी मिठास बनाए रखना।

होली वस्तुतः मन की गांठें खोल देने का त्योहार है। इस दिन लोग पुराने मन मुटाव को भूल कर सद्भाव की नई शुरुआत करते हैं। होली पर जो लोग दूसरे को चोट पहुंचाने, अभद्रता करने और स्त्रियों को रंग लगाने के बहाने उनकी गरिमा को ठेस पहुंचाने का प्रयास करते हैं, उनमें दूर ही रहना चाहिए। उनकी हरकतों से यह साबित होता है कि वे सभ्य नहीं हैं और उनके मन का एक रंग है यानी काला। जिस पर किसी रंग का असर नहीं होता।

होली को कभी बदरंग न होने दें। क्योंकि विविध रंग मिल कर ही सतरंगी बनते हैं। इस अवसर हर मनुष्य समाज और परिवार में रिश्तों का ऐसा इंद्रधनुष बनाए जिसमें मर्यादा तो है ही, एक ऐसी गरिमा भी हो, जिसकी गरमाहट अगली होली तक बनी रहे।



## शहीदों के परिवारों की मदद में सरकार कोई कमी नहीं आने देगी: अशोक गहलोत

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि राज्य सरकार देश की सीमाओं



की रक्षा करते शहीद हुए हमारे जांबाज सैनिकों के परिवारों की मदद में कोई कमी नहीं आने देगी। उन्होंने कहा कि हम सभी देशवासी इस मुश्किल घड़ी में शहीदों के परिवारों के साथ खड़े हैं। श्री गहलोत उन्हें मिले स्मृति चिन्हों तथा उपहारों के नीलामी कार्यक्रम 'वीरांजलि' में शहीदों के परिवारों

की मदद के लिए मुक्तहस्त से सहयोग करने वाले भामाशाहों को संबोधित कर रहे थे।

भारत सेवा संस्थान के माध्यम से महावीर जैन स्कूल में हुए इस कार्यक्रम में श्री गहलोत को मिले स्मृति चिन्हों तथा उपहारों की नीलामी और भामाशाहों द्वारा समर्पित राशि से करीब 1.36 करोड़ रूपए की राशि प्राप्त हुई है। इनमें से एक करोड़ 6 लाख रूपए 239 चैक के माध्यम से तथा करीब 30 लाख रूपए का सहयोग उपलब्ध कराने के लिए दानदाताओं ने अपनी प्रतिबद्धता दर्शायी। साथ ही भामाशाहों ने शहीदों के परिवारों के लिए पांच फ्लैट भी समर्पित किए। यह राशि मुख्यमंत्री सहायता कोष के माध्यम से शहीदों के परिवारों की मदद के लिए दी

जाएगी। श्री गहलोत ने इस अवसर पर सभी भामाशाहों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जब-जब भी ?से मौके आए राज्य सरकार के साथ-साथ प्रदेशवासियों ने भी आगे आकर खुले मन से शहीद परिवारों की मदद के लिए सहयोग किया है। बड़ी संख्या में प्रदेशभर से भामाशाह शहीदों के परिवारों के सहयोग के लिए आज इस कार्यक्रम में आए हैं जो दिखाता है कि हम सभी अपना फर्ज अदा करने में पीछे नहीं रहे हैं। उन्होंने कहा कि करगिल युद्ध के समय मुझे 56 शहीदों के परिवारों की पीड़ा को नजदीक से जानने तथा बहादुर सैनिकों की शहादत को नमन करने का मौका मिला था। उस समय हमारी सरकार ने शहीदों के परिवारों की सहायता के लिए जो पैकेज दिया वह देश में सबसे बेहतर था।

## बीमार व्यक्ति के सामने ऐसी हरकत करे कुत्ता तो होगा अपशगुन, ये संकेत भी होते हैं अशुभ

कुत्ते को संस्कृत में श्वान कहा गया है, जिसे यमराज से जोड़ा जाता है। इसीलिए कुत्ते को यहां अशुभ मानते हैं। हिंदू धर्म शास्त्रों में कई ऐसे संकेत बताये गए हैं,



जिससे आप इस बात का अंदाजा लगा सकते हैं कि आपको मनोवाञ्छित कार्य में सफलता मिलेगी या नहीं। इन संकेतों को शगुन-अपशगुन कहा जाता है। हालांकि कई लोग इन बातों को अंधविश्वास मानते हैं लेकिन कई लोग इन बातों पर विश्वास भी करते हैं। इस खबर के माध्यम से हम आपको बता रहे हैं कि घरों में पाले जाने वाले कुत्ते भी अपनी हरकतों से ये इशारे देते हैं कि, घर में खुशी आएगी या गम। बता दें कि, कुत्ते को संस्कृत में श्वान कहा गया है, जिसे यमराज से जोड़ा जाता है।

इसीलिए कुत्ते को यहां अशुभ मानते हैं। आइये जानते हैं कुत्ते से जुड़े शगुन-अपशगुन के कई राज...।

-कुत्तों का भौंकना एक सामान्य सी घटना हो सकती है लेकिन जब कोई कुत्ता दिन में आसमान की ओर देखकर भौंके तो यह अच्छा संकेत नहीं होता। माना जाता है कि कुत्ता यह कह रहा है कि आने वाले दिनों में पानी की काफी कमी हो सकती है।

-अगर कहीं जाते हुए रास्ते में कुत्ता दोनों कान फड़फड़ाता हुआ दिख जाए तो जो भी काम आप करने जा रहे हैं उसे स्थगित कर दें। ऐसा कहा जाता है कि जैसे वह बता रहा हूँ कि काम नहीं होगा या इसमें नुकसान हो सकता है।

-यदि आप किसी जरूरी काम से जा रहे हैं और रास्ते में कोई कुत्ता आपके सामने जमीन पर लौटने लगे तो समझ लीजिए कि आपका काम नहीं बनेगा।

-अगर कोई कुत्ता आपका जूता या चप्पल लेकर भाग जाए तो सावधान हो जाइए क्योंकि यह आर्थिक नुकसान का संकेत होता है। ऐसे हालातों में कहीं

दूर की यात्रा पर जाना स्थगित कर देना चाहिए।

- जिस कुत्ते की पूंछ या कान कटे हो औप वह किसी यात्री के सामने आ जाए तो कार्य में असफलता निश्चित है।

- किसी यात्रा पर जाते समय यदि रास्ते में सामने किसी कुत्ते को मुंह में पत्थर दबाए आता दिखाई दे या हड्डी का टुकड़ा मुंह में दबाए गुर्राता दिखाई दे तो यात्रा के दौरान कष्टों की संभावना रहती है।

- यदि कोई कुत्ता जाते हुए व्यक्ति के साथ बाईं ओर चलता है तो उसे सुंदर स्त्री व धन मिलता है। यदि दाहिनी ओर चले तो चोरी से धन हानि की सूचना देता है।

-यदि किसी रोगी के सामने कुत्ता अपनी पूंछ या हृदय स्थल बार-बार चाटे तो शकून शास्त्र के अनुसार बहुत ही जल्दी उस रोगी की मृत्यु होने की संभावना रहती है।

## प्रदेश में गेहूं की फसल को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद हेतु पंजीकरण 5 मार्च से

जयपुर। प्रदेश में गेहूं की फसल को न्यूनतम समर्थन मूल्य 1840 प्रति क्विंटल पर बेचने के लिए भारतीय खाद्य निगम के पोर्टल पर 5 मार्च से कृषक पंजीकरण करवा सकते हैं। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री रमेश चंद्र मीणा ने बताया कि आगामी 15 मार्च से कोटा संभाग में एवं अन्य संभागों में 1 अप्रैल से गेहूं की खरीद न्यूनतम समर्थन मूल्य पर की जाएगी।

पोर्टल पर पंजीकरण हेतु यह दस्तावेज साथ लाएं- खाद्य मंत्री ने बताया कि कृषक भारतीय खाद्य निगम के पोर्टल पर पंजीकरण के लिए फोटो

पहचान पत्र, आधार कार्ड, राशन कार्ड, जॉब कार्ड, लाइसेंस, किसान क्रेडिट कार्ड एवं पासपोर्ट साइज लेकर निकटतम ई मित्र केंद्र पर जाएं जहां वे अपना पंजीकरण करवा सकते हैं। उन्होंने बताया कि पंजीकरण के लिए कृषक फसल संबंधी दस्तावेज जमाबंदी, किसान पासबुक, गिरदावरी एवं बैंक पासबुक की फोटो प्रति भी साथ लेकर जाएं। उन्होंने बताया कि कृषक भारतीय खाद्य निगम के अधिकृत पोर्टल [fcidepotonline-gov.in/farmers@login](http://fcidepotonline-gov.in/farmers@login) पर जाकर स्वयं भी पंजीकरण कर सकते हैं।

## लव मैरिज होगी या अरेंज मैरिज, पैर की इस अंगुली से जानिए

जिनकी शादी की उम्र है, उनके मन में उथल-पुथल चलती रहती है कि उनका जीवन साथी कौन होगा, कैसा होगा। ऐसे भी लोग होंगे जो कि किसी को पसंद करते हैं, या प्यार करते होंगे।

ऐसे में कईयों के मन में यह सवाल जरूर आता होगा कि उनकी लव मैरिज

कमरे में जाएं। आराम से बैठें और फिर लव मैरिज और अरेंज मैरिज की संभावना को जानने के लिए सबसे पहले अपने पैरों तरफ गौर करिए। पैर के अंगूठे की पास वाली अंगुली पर नजर डालें।

यदि आपके पैर के अंगूठे की पास वाली अंगुली अंगूठे की साइज से थोड़ी-



होगी या अरेंज मैरिज। अगर आपकी शादी नहीं हुई है तो पैरों की अंगुलियों को देखकर अपनी शादी के बारे में अंदाजा लगा सकते हैं की आपकी लव मैरिज होगी या अरेंज मैरिज होगी।

इसके लिए आपको अपने पैरों पर गौर करना होगा। इसलिए शांति से पहले एक

सी भी छोटी है तो आप समझ जाइए कि आपकी अरेंज मैरिज होने की ज्यादा संभावना है।

यह भी ध्यान दें कि अंगूठे के पास वाली अंगुली अंगूठे के बराबर है तो भी अरेंज मैरिज का ही योग बनता है। यदि आपके पैर के अंगूठे के पास वाली अंगुली अंगूठे के साइज से बड़ी है तो आप समझ जाइए कि आपकी शादी उसी व्यक्ति से होने के योग होते हैं जिससे आप प्यार करते हैं या फिर आप जिसे अपना जीवन साथी बनाना चाहते हैं। यानी अंगूठे के पास वाली अंगुली अंगूठे से बड़ी होती है तो व्यक्ति की लव मैरिज होने की संभावना प्रबल है।

## 7 मुखी रुद्राक्ष पहनने के जबरदस्त फायदे

हिन्दू धर्म में रुद्राक्ष धारण करने का बड़ा ही महत्व माना जाता है, दैवीय गुणों से भरपूर रुद्राक्ष को स्वयं भगवान शिव का स्वरूप कहा जाता है। जैसे तो रुद्राक्ष कई प्रकार के पाये जाते हैं और सबका अपना अपना महत्व बताया जाता है।

रुद्राक्षों में एक रुद्राक्ष 7 मुखी भी होता है जिसकी विशेषता जानकर आप हैरान हो जाएंगे। सात मुखी रुद्राक्ष को माता महालक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है, और ऐसा कहा जाता है कि इस रुद्राक्ष को धारण करने वाले के ऊपर शनिदेव की भी विशेष कृपा बनी रहती है।

जानकार कहते हैं की 7 मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से व्यक्ति की धन-संबंधी सभी समस्या दूर हो जाती है, धन आवक के नये-नये द्वार खुलने लगते हैं, जो व्यक्ति अपनी आर्थिक स्थिति से परेशान है उन्हें इस 7 मुखी रुद्राक्ष को जरूर धारण करना चाहिए। पूरे परिवार को आर्थिक संकट से बचाने के लिए 7 मुखी रुद्राक्ष की स्थापना अपने घर के पूजा स्थल पर करनी चाहिए। कहा जाता है कि व्यक्ति की आय होने के बाद भी खर्च आय से अधिक होने लगे तब भी 7 मुखी रुद्राक्ष लाभ पहुंचाता है।

सात मुखी रुद्राक्ष पहनने के लाभ  
1- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से

व्यक्ति के आय स्रोतों में वृद्धि होने लगती है, माँ लक्ष्मी की कृपा ऐसे व्यक्ति पर सदैव बनी रहती है।

2- शनि की साढ़े साती या ढैय्या के



समय 7 मुखी रुद्राक्ष पहनने से लाभ मिलता और 7 इस रुद्राक्ष को धारण करने वाले पर शनिदेव भी प्रसन्न रहते हैं।

3- नौकरी और व्यापार में उन्नति के लिए 7 मुखी रुद्राक्ष को धारण चाहिए।

4- सात मुखी रुद्राक्ष में सप्त ऋषियों का आशीर्वाद मिला होता है, इस रुद्राक्ष को धारण करने से शरीर में सप्त धातुओं की रक्षा होती है।

5- सात मुखी रुद्राक्ष पहनने से स्नायु तंत्र से सम्बंधित रोगों में लाभ प्राप्त

होता है।

6- मानसिक परेशानी, गठिया दर्द, हड्डी व मांसपेशियों में पीड़ा व अस्थमा जैसे रोगों में सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ मिलता है।

इस रुद्राक्ष को धारण करने के विधि

सात मुखी रुद्राक्ष को पहनने से पहले इसे इस प्रकार से शुद्ध व पवित्र करना अति आवश्यक होता है- सोमवार, शिवरात्रि या श्रावण मास के किसी भी दिन रुद्राक्ष को धारण करने के लिए शुभ माना गया है। एक चांदी या तांबे की कटोरी में दूध, दही, शहद, घी, एवं शकर लेकर के मिला लें अब इस मिश्रण में रुद्राक्ष को स्नान करायें, स्नान के बाद शुद्ध जल व गंगाजल से पूनः स्नान कराकर पूजा स्थल पर लाल वस्त्र पर रख दें, एक गाय के घी का दीपक जलाकर इस मंत्र का 501 या 1100 बार जप करें।

मंत्र

॥ ॐ नमः शिवाय, या ॐ हूं नमः ॥  
जप के बाद भगवान शिव का स्मरण करते हुए इसे गले में धारण कर लें। इस सिद्ध किए हुए रुद्राक्ष के चमत्कारिक प्रभाव आपको केवल 7 दिनों में ही दिखाई देने लगेंगे।

### समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बन्धित विवरण घोषणा-फार्म-4

- |  |   |
|--|---|
| 1. प्रकाशन स्थल  | - जयपुर                                       |
| 2. प्रकाशन अवधि  | - मासिक                                       |
| 3. मुद्रक का नाम                                       | - रजनी  |
| क्या भारत का नागरिक हैं                                | - हाँ   |
| पता  | सी-57, महेश नगर, 80 फीट रोड, जयपुर-15         |
| 4. प्रकाशक का नाम                                      | - रजनी  |
| क्या भारत का नागरिक हैं                                | - हाँ   |
| पता  | सी-57, महेश नगर, 80 फीट रोड, जयपुर।           |
| 5. सम्पादक का नाम                                      | - भवनेश धावनिया                               |
| क्या भारत का नागरिक हैं                                | - हाँ   |
| पता  | सी-57, महेश नगर, 80 फीट रोड, जयपुर।           |
| 6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी | - रजनी<br>सी-57, महेश नगर, 80 फीट रोड, जयपुर। |

हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।

मैं रजनी एतद् द्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर  
( रजनी )

दिनांक : 5 मार्च, 2019

प्रकाशक के हस्ताक्षर